

प्रयो. जुआ खेलना, जुआ जीतना 2. हल, बैलगाड़ी आदि खींचने में बैलों के कंधों पर रखी जाने वाली लकड़ी या लकड़ी का बना हुआ कृषि कार्य के लिए एक उपयोगी उपकरण 3. मूठ।

जुआखाना पुं. (तद्.) वह स्थान जहाँ लोग जुआ खेलते हैं।

जुआघर पुं. (देश.) दे. जुआखाना।

जुआइना स.क्रि. (तद्.) बैल आदि को जुए में जोतना।

जुआरी पुं. (तद्.) जुआ खेलने वाला व्यक्ति। वि. जुआ खेलने वाला स्त्री. जुआरिन प्रयो. "कहें कबीर अंतकी बारी, हाथ के चले जुआरी" -कबीर।

जुई स्त्री. (देश.) एक छोटा कीड़ा जो मटर, सेम आदि की फलियों में लग जाता है।

जुई स्त्री. (देश.) जुही।

जुकति स्त्री. (देश.) दे. जुगत।

जुकाम पुं. (अर.) एक रोग जिसमें नाक बहने लगती है और शरीर में ज्वर भी चढ़ जाता है। मुहा. 1. जुकाम बिगड़ना-जुकाम का सूख जाना 2. मँढ़की को जुकाम होना-स्वभाव या अवस्था के विपरीत काम करना।

जुकिहारा पुं. (देश.) जोंक लगाने वाला।

जुकुट पुं. (तत्.) 1. कुत्ता 2. मलय पर्वत।

जुग पुं. (तद्.) युग, जमाना मुहा. जुग-जुग जियो-चिरकाल तक जीवित रहो, अमर रहो; जुग टूटना- फूट पड़ जाना।

जुगजुगाना अ.क्रि. (देश.) टिमटिमाना, 'झिलमिलाना', संपन्नता की ओर बढ़ना।

जुगजुगी स्त्री. (देश.) 1. एक चिड़िया-शकरखोरा 2. जुगनू नामक आभूषण।

जुगत स्त्री. (तद्.) युक्ति, उपाय, तरकीब मुहा. जुगत लगाना- जोड़-तोड़ भिड़ाना।

जुगती स्त्री. (तद्.) युक्ति, जोड़-तोड़।

जुगनी स्त्री. (देश.) दे. जुगनू।

जुगनू पुं. (देश.) 1. एक कीड़ा जिसकी दुम से प्रकाश निकलता है 2. एक प्रकार का आभूषण।

जुगराफिया पुं. (अर.) भूगोल।

जुगल पुं. (तद्.) दे. युगल, युगल का तद्भव रूप, दोनों।

जुगवना स.क्रि. (तद्.) 1. संचित करना, एकत्र करना 2. सुरक्षित रखना।

जुगाड़ पुं. (देश.) 1. व्यवस्था 2. युक्ति मुहा. जुगाड़ बैठाना- युक्ति करना, जोड़-तोड़ करना या बैठाना।

जुगादरी वि. (तद्.) बहुत दिनों का, बहुत पुराना।

जुगाना स.क्रि. (तद्.) जुगवाना, यत्नपूर्वक इकट्ठा करके सँभाल कर रखना।

जुगार स्त्री. (देश.) जुगाली।

जुगालना अ.क्रि. (देश.) पागुर करना, जुगाली करना।

जुगाली स्त्री. (देश.) गाय-बैल आदि का निगले हुए चारे को थोड़ा-थोड़ा निकाल कर फिर से चबाने की क्रिया।

जुगुति स्त्री. (तद्.) जुगत।

जुगुप्सक वि. (तत्.) दूसरे की निंदा करने वाला, निंदक, परनिंदक।

जुगुप्सन पुं. (तत्.) निंदा करना, बुराई करना।

जुगुप्सा स्त्री. (तत्.) 1. निंदा, परनिंदा 2. घृणा अरुचि, अश्रद्धा टि. काव्यशास्त्र के अनुसार वीभत्स रस का स्थायी भाव 3. ग्लानि, ग्लानिकारक कर्म 4. फटकार।

जुगुप्सित वि. (तत्.) निंदित, घृणित।

जुगुप्सु वि. (तत्.) निंदक, बुराई करने वाला, घृणा करने वाला।

जुज पुं. (अर.) 1. अंश, टुकड़ा 2. कागज के आठ या सोलह पृष्ठों का समूह, फार्म 3. ग्रंथ खंड, जिल्द। इस शब्द का सही एवं शुद्ध रूप है- जुज्ब।